पवमान पवमान जगद प्राण
संकरुषण भव भयारण्य दहन । प ।
श्रवणवे मोदलाद नवविध भकुतिय
तवकदिंदलि कोडु कविजनप्रिया । अप ।
हॆम कच्चूट उपवीत धरित मारुत
कामादिवर्गरहिता व्योमादि सकल व्यावृता निर्भीता
रामचंद्रन निजदूत याम यामके निनारधिपुदके
कामिपे एनगिदु नॆमिसि प्रतिदिन ई मनसिगे सुखस्तॊमव
तॊरुत पामरमतियनु नीमाणिपुदॊ ॥ १ ॥
वज्र शरीर गंभीर मुकुटधर दुर्जनवनकुठार
निर्जरमणि दया पारावारा उदार सज्जनरघपरिहार
अर्जुनगोलिदंदु ध्वजवानिसि निंदु मूर्जगवरिवंते
गर्जने माडिदि हेज्जे हेज्जेगे निन् अब्ज पाददोळि मूर्जगदलि
भववर्जित नेनिसॊ ॥ २ ॥
प्राण अपान व्यान उदान समान आनंद भारति रमण
नीने शर्वादिगीर्वाणाद्यरिगे जानधनपालिप वरॆण्य
नानु निरुतदलि ऎनॆनेसगुवे मानसादि कर्म
निनगोप्पिसिदेनॊ प्राणनाथ सिरिविजयविठलन
काणिसिकोडुवुदु भानुप्रकाश ॥ ३ ॥